CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

सह–शैक्षिक गतिविधियाँ बालक के व्यक्तित्व विकास का आधार

शैलजा बेनीवाल
पी.एचडी शोधार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
Email beniwalshailja@gmail.com, Mob- 7976124289

First draft received: 21.09.2024, Reviewed: 28.09.2024, Final proof received: 29.09.2024, Accepted: 30.09.2024

सार संक्षेप

शिक्षा वह है जो बालक का सर्वांगीण विकास करे यथा–शारीरिक,मानसिक,आध्यात्मिक विकास करते हुए बालक को राष्ट्र का सुनागरिक बनाये। क्योंकि बालक ही राष्ट्र का भावी कर्णधार है–जिसका सर्वांगीण विकास हम सब का नैतिक कर्तव्य है बालक ही भावी राष्ट्र निर्माता है। अतः उसका चहुंमुखी विकास अनिवार्य है। बालक में राष्ट्रीय मूल्यों, नैतिक मूल्यों, मानवीय मूल्यों का अधिकतम समावेश हो और वह समाज और राष्ट्र के लिए एक उपयोगी नागरिक बन सके।इस हेतु शिक्षा विभाग द्वारा विद्यालयों में सह शैक्षिक गतिविधियों का वर्षपर्यन्त आयोजन किया जाता है। पाठ्यक्रमी शिक्षा के साथ–साथ विद्यालय में अन्य सहशैक्षिक गतिविधियों का संचालन शिक्षा विभागीय निर्देशानुसार किया जाता है।

प्रस्तावना

यथा–प्रार्थना सभा कार्यक्रम जो विद्यालय प्रारंभ से पूर्व किया जाता है– जिससे बालक में सर्वधर्म समभाव के साथ आध्यात्मिक और मानसिक बुद्धि का विकास होता है। इसी प्रकार खेलकूद की गतिविधियों से बालक शारीरिक विकास के साथ–साथ सामूहिकता का भाव विकासित करते हुए अपने आत्मबल का उन्नयन भी करता है। विद्यालयों में NCC, NSC, स्काउट गाईड की गतिविधियों के द्वारा बालकों में राष्ट्रप्रेम और श्रम के प्रति निष्ठा का भाव जाग्रत होता है। एन.सी.सी. के माध्यम से बालक सेना से जुड राष्ट्र सेवा की और अग्रसर होते है।

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन भी विद्यालय के सह–शैक्षिक गतिविधियों के तहत किया जाता है। जिससे भावी पीढ़ी में भारतीय साहित्य, संस्कृति, कला के प्रति लगाव बढ़ता हैऔर वह उन्हें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित करने का माध्यम बन अपनी संस्कृति का संरक्षण करता है तथा आने वालीपीढ़ी को अपनी संस्कृति का ज्ञान करवाता है तथा स्वयं में साहित्य बोध का विकास करते हुए साहित्य सर्जन की और उन्नमुख होता है, क्योंकि किसी भी राष्ट्र का साहित्य ही उसकी अस्मिता को संरक्षित एवं सनातन बना सकता है। साहित्य ही उस राष्ट्र की संस्कृति एवं सभ्यता का दर्पण होता है।यह दर्पण ही भावी पीढ़ी को दिशा बोध कराता है ओर उन्हें सुनागरिक बनने की दिशा में अग्रसर करता है। सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से बालक में कर्तव्य बोधता का विकास होता है और वह राष्ट्र का कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनता है।

शैक्षिक भ्रमण का भी समय –समय पर सह–शैक्षिक गतिविधियों के तहत विद्यालयों में विभागीय निर्देशानुसार आयोजन किया जाता है। जिससे बालको का अपने ऐतिहासिक स्थलों को प्रत्यक्ष देखने का अवसर प्राप्त होता है। जिससे उसमें अपने इतिहास और विरासत पर गर्व करने का भाव विकसित होता है, और धरोहरों के संरक्षण के प्रति भी जागरूक होते है क्योंकि हमारे इतिहास एवं विरासतों का ज्ञान भावी पीढ़ी को करवाना शिक्षा का एक मूल ध्येय है,जो सह शैक्षिक गतिविधि शैक्षिक भ्रमण के द्वारा सहजरूप से हो जाता है।

इसी प्रकार इको क्लब, विज्ञान क्लब, बाल–अधिकार क्लब, सड़क सुरक्षा क्लब इत्यादि सह शैक्षिक गतिविधियों का संचालन भी विभागीय मार्ग दर्शन में किया जाता है। इको क्लब से बालकों में पर्यावरणीय ज्ञान, पर्यावरण महत्ता और पर्यावरण संरक्षण के प्रति विशेष जागरूकता पैदा होती है क्योंकि प्रकृति का संरक्षण ही हमें जीवन देगा।प्रकृति और मानव जीवन एक दूसरे के पूरक है। प्रकृति क्षरण मानव

जीवन का क्षरण है, और हमारी प्राचीन संस्कृति में तो पर्यावरण और प्रकृति के संरक्षण को विशेष स्थान दिया गया है। इसी प्रकार विज्ञान क्लब का विद्यालयों में संचालन, बालकों में शोध के प्रति लगाव,और उनमें जिज्ञासा की प्रकृति का विकास करता है। बाल अधिकार क्लब बालकों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाता है, तो सड़क सुरक्षा क्लब छात्रों के सड़क पर कैसे सुरक्षित चला जाये, सड़क परिवहन के नियमों की जानकारी दे उन्हें स्वयं सुरक्षित कैसे रहे ? और समाज को कैसे सड़क पर सुरक्षित चले। इसके नियमों की जानकारी दे, स्वयं जागरूक रहते हुए समाज को भी जागरूक करता हैं। इन क्लबों में समय–समय पर विशेषज्ञों द्वारा वार्ताओं का आयोजन करवा बालकों में कर्तव्य बोध एवं जागरूकता का विकास करते है।

हमारे राष्ट्रीय पर्वों स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस का विद्यालयों में भव्य आयोजन भी बालकों में राष्ट्रभक्ति एंव कर्तव्यबोध का भाव विकसित करता है।

इसी क्रम में शिक्षा विभाग राजस्थान के निर्देशानुसार विद्यालयों में बालकों के सर्वागीण विकास और उनमें समाज, राष्ट्र एवं स्वयं कर्तव्यों के प्रति जागरूकता सतत् प्रवाह होता रहे। इस हेतु सहशैक्षिक गतिविधियों के तहत बाल सभा का नियमित आयोजन किया जाता है।

पूर्व में बाल सभा का आयोजन विद्यालय प्रांगण में प्रत्येक शनिवार को किया जाता था। अब समाज हित में प्रत्येक अमावस्या को गांव के सामुदायिक स्थल पर बाल सभा का आयोजन किया जाता है। जिसमें शिक्षक, बालकों सहित समस्त ग्रामवासियों एवं गणमान्य नागरिक की सहभागिता रहती है। इस सामुदायिक बाल सभा के आयोजन से समाज, शिक्षा सभी का उन्नयन होता है। सामुदायिक बाल सभा रूपी नवाचार शिक्षा के क्षेत्र में एक मील का पत्थर है–जो बालकों के साथ–साथ अभिभावकों को भी शिक्षा और समाज के प्रति जागरूक बनाता है। विभागीय निर्देशानुसार सामुदायिक बाल सभा का आयोजन किया जाता है। जिसमें समस्त अभिभावकों, ग्रामवासियों, शिक्षकों, बालकों की उपस्थिति सुनिश्चित की जाती है। प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में इस सामुदायिक बाल सभा में जिला प्रशासन से लेकर शिक्षा प्रशासन तक सभी की सहभागिता रहती है।

यह बाल सभा बालकों की छुपी हुई प्रतिभा के प्रगटीकरण का एक श्रेष्ठ मंच हैं, जो बालकों में आत्मविश्वास के साथ उनमें स्वयं को प्रस्तुत करने की प्रतिभा का विकास करती है। शिक्षा विभाग राजस्थान की सामुदायिक बाल सभा का एक श्रेष्ठतम नवाचार है जो बालकों के चहुंमुखी विकास का एक प्रमुख माध्यम है। सामुदायिक बाल सभा में बालकों को आगे बढ़ने हेतु विशेष प्रोत्साहन दिया जाता है तथा बालकों का बोर्ड परीक्षा परिणाम श्रेष्ठ रहे इस हेतु उन्हें तनाव रहित परीक्षा की तैयारी के विषय में जानकारी दे, उनमें आत्मविश्वास पैदा किया जाता है। जिससे बालक आत्म विश्वास पूर्वक शिक्षण करते हुए परीक्षा में अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन कर सके।

सामुदायिक बाल सभा रूपी सह–शैक्षिक गतिविधियों में बालकों को उनके अधिकारों के साथ उनमें कर्तव्य बोध का भी संचार होता है। इस सह शैक्षिक गतिविधि में शिक्षा विभागीय योजनाओं और राज्य सरकार की जनहितकारी योजनाओं के विषय में भी जानकारी दे, उन्हें इसके प्रति जागरूकता विकसित की जाती है। सामुदायिक बाल सभा के माध्यम से बालकों में मौलिक अधिकार , मौलिक कर्तव्य, धर्म निरपेक्ष , लोकतांत्रिक , समाजवादी गणतंत्र आदि के तात्पर्य से अवगत कराने से उनमें सुनागरिकता के गुणों का विकास होता है। और वह राष्ट्र के अच्छे नागरिक बन सभी कर्तव्यों को वहन करने में सक्षम बन जाते है। इस दृष्टि से शिक्षा विभाग राजस्थान की सामुदायिक बाल सभा आयोजन का नवाचार सह–शैक्षिक गतिविधियों में एक महत्वपूर्ण कदम है। जो बालकों के सर्वार्गीण विकास में अपनी महत्ती भूमिका निभा रहा है।

इस प्रकार शिक्षा का मूल उद्देश्य बालकों का सर्वार्गीण विकास करना है। जो विद्यालयों में आयोजित की जाने वाली सह–शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से ही संभव है। बालक में आत्मविश्वास के साथ उसका शारीरिक,मानसिक, आध्यात्मिक , नैतिक विकास इन सहशैक्षिक गतिविधियों से ही संभव है। उक्त संपादित की जाने वाली गतिविधियों से ही उसमें नैतिक मूल्य, धर्म निरपेक्ष मूल्यों, सहभागिता, मानवता, सहयोग की भावना , परोपकार के भाव इत्यादि –इत्यादि गुणों का विकास होता है। और वह राष्ट्र का एक सुनागरिक बनने के सभी गुणों से परीपूर्ण होने की और अग्रसर होता है।

अतः विद्यालयों में आयोज्य सहशैक्षिक गतिविधियाँ बालक के सर्वार्गीण विकास का का एक मूल आधार है।

संदर्भ

1. शिक्षा विभागीय निर्देश राजस्थान
2. अस्थाना,विपीन, 1994, मनोविज्ञान और शिक्षा के मापन ओर मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2 (उ.प्र.),पृ.सं.53
3. भटनागर, सुरेश, 1993 अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, चतुर्थ संस्करण।
4. भटनागर, सुरेश, वशिष्ठ कमला,सिंह एम.के. – 1996 शैक्षिक प्रबन्ध और शिक्षा की समस्याएँ सूर्या पब्लिकेशंन, द्वितीय संस्करण, पृ.सं. 38–39
5. भटनागर, सुरेश, 1997 – शिक्षा मनोविज्ञान लॉयल बुक डिपो, मेरठ, पृ.सं. 195–198